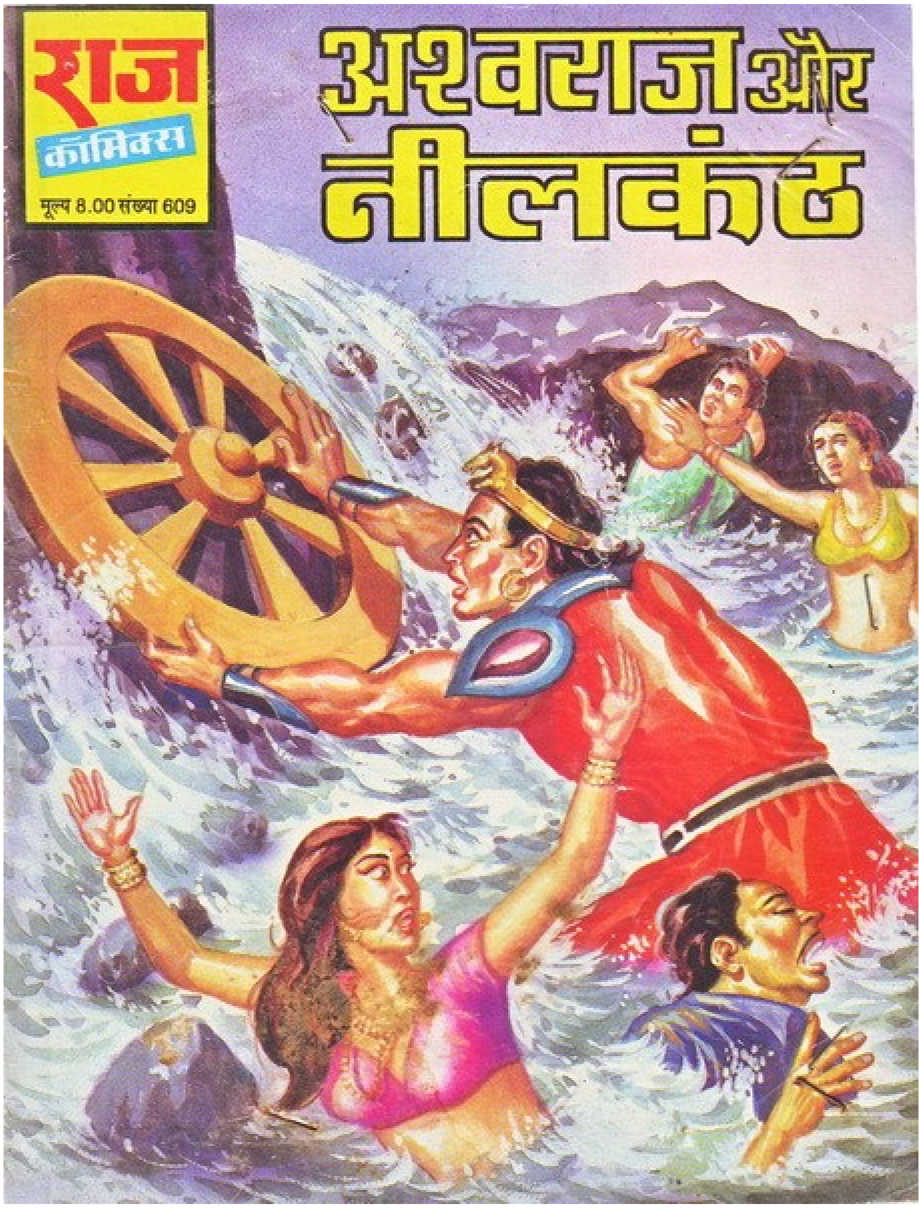
राज
कॉमिक्स
मूल्य 8.00 संख्या 609
अश्वराज और नीलकंठ

अश्वराज और नीलकंठ
- लेखक -
तरुणकुमार वाही
- संपादन -
मनीष गुप्ता
- कलानिर्देशन -
प्रताप मुलीक
- चित्रांकन -
मिसाल / भोसले
अश्वलोक का विलक्षण अश्वमानव इच्छाधारी अश्वराज !
पृथ्वी पर हुई एक शानदार रथ मैराथन को जीतने के बाद उसकी अर्धांगिनी बनी राजा विचित्रसिंह की पुत्री राजकुमारी कुकुमफुल्ली!
अश्वराज जिंदाबाद
राजकुमारी की जय
फिर अश्वमेध यज्ञ के अश्व कल्पतरु की सम्पूर्ण अश्वलोक की परिक्रमा करवाकर वह बना चक्रवर्ती सम्राट।
इसी बीच मानवता व अश्वता के कई दुश्मन पैदा हुए और अश्वराज के हाथों मारे गए।

1378

तब आया अश्वबाज। शैतान की योजना कारूं का खजाना लूटकर भविष्य में चले आने की थी–
जिसके लिए उसके पास थी वो तिलिस्मी शक्ति–
लेकिन इससे पहले कि उसकी मंशा पूरी हो पाती...
...वहां आ पहुंचा अश्वराज!
शैतान अश्वबाज का उद्देश्य पूरा न हो सका था–
लेकिन अश्वराज भी अपने रथ को उस तिलिस्मी घेरे में जाने से न रोक सका।
रथ के साथ ही अश्वराज के प्रिय रक्ताक्षर, कालाखोर, अश्ववट, नीलकंठ, श्वेतशक्ति और राजकुमारी कुदमचुम्बी भी समा गये थे उस तिलिस्मी घेरे में–
तब छोटे होते तिलिस्मी घेरे में समा गया अश्वराज भी। क्योंकि उसे रथ पंचाश्व, कारूं का खजाना और राजकुमारी कुदम को भी वापस लाना था।
भविष्य में वह कलयुग पहुंचा। जहां घोड़े के व्यापारी अश्वत्थामा के बताए सूत्रों के जरिए अश्ववट और कालाखोर कठिन प्रयासों के बाद मिल गये–
लेकिन अब भी उसके सामने नीलकंठ, श्वेतशक्ति, रक्ताक्षर और कुदमचुम्बी की तलाश का प्रश्न मुंह बाए खड़ा था।

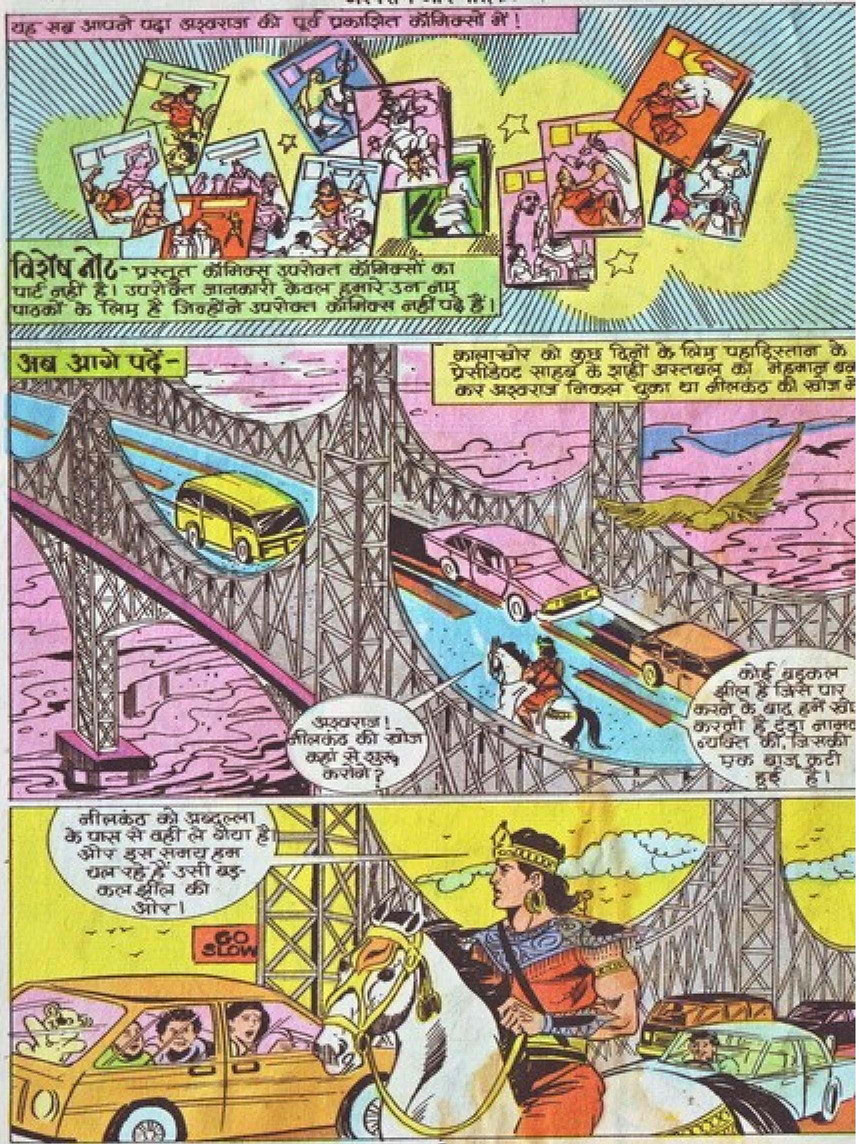
यह सब आपने पढ़ा अश्वराज की पूर्व प्रकाशित कॉमिक्सों में !
विशेष नोट- प्रस्तुत कॉमिक्स उपरोक्त कॉमिक्सों का पार्ट नहीं है। उपरोक्त जानकारी केवल हमारे उन नए पाठकों के लिए है जिन्होंने उपरोक्त कॉमिक्स नहीं पढ़े हैं।
अब आगे पढ़ें-
कालाचोर को कुछ दिनों के लिए पहाड़िस्तान के प्रेसीडेंट साहब के शाही अस्तबल का मेहमान बना कर अश्वराज निकल चुका था नीलकंठ की खोज में
अश्वराज! नीलकंठ की खोज कहां से शुरू करोगे?
कोई बड़कल झील है जिसे पार करने के बाद हमें खोज करनी है डंडा नामक व्यक्ति की, जिसकी एक बाजू कटी हुई है।
नीलकंठ को अब्दुल्ला के पास से वहीं ले गया है और इस समय हम चल रहे हैं उसी बड़कल झील की ओर।
GO SLOW

इधर शहर से बाहरी क्षेत्र में कुछ रहस्यमय चल रहा था–
बस हो गया!
दिख तो नहीं रहीं?
जब पिछले पन्द्रह दिनों से आज किसी को नहीं दिखी तो अब क्या दिखेगी!
मैंने कई दिन तक इस क्षेत्र की निगरानी की है इधर कोई आता-जाता नहीं है...
...फिर भी एहतियात जरूरी है।
आज के बाद कोई आए या जाए, हमारी सेहत पर क्या फर्क पड़ने वाला है...
लेकिन पटेल आज तू हर पल सतर्क रहना, क्योंकि आज मैं आस लेकर ही लौटूंगा।
कुएं के तल पर उतर आया ब्रजेश–
कुएं के तल से यह एक सुरंग थी, जो ब्रजेश और पटेल की पिछले पन्द्रह दिनों की मेहनत का परिणाम थी।

ठीक बड़कल झील के नीचे से इस सुरंग को बनाना आसान काम न था। लेकिन हमने यह संभव कर दिखाया।
जेब में से नक्शा निकाल कर अपने सामने फैला लिया उसने —
हमारी खोदी सुरंग की इस दीवार से ठीक तीन फुट दूर हमारी मंज़िल है
और यह था नक्शा —
WELL
ROPE
LIFT CHAIR
TUNNEL
CAVES
DIAMOND EYE
कुलेश और पटेल द्वारा तैयार नक्शा —
पाँच बरस पूर्व पुरातत्व विभाग द्वारा की गई खुदाई में मध्यकाल की गुफाओं का पता चला था —
अजंता, एलोरा की ही तरह, यहां मौजूद सैकड़ों गुफाओं में कई कीमती व दुर्लभ मूर्तियां हैं।
इन पर रत्न जड़े हैं।

उन्हीं गुफाओं में छिपी थी वह बेशकीमती मूर्ति—
उफ! इस मूर्ति की आंख से अद्भुत प्रकाश फूट रहा है।
ये हीरा है या कोई मणि?
इन गुफाओं और मूर्तियों के मिलने के पांच वर्ष बाद गुफाओं को सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए खोल दिया गया था—
वाह!
अद्भुत!
बहुमूल्य मूर्तियों के कारण वहां सुरक्षा का कड़ा प्रबन्ध किया गया—
और इन सारी गुफाओं का अधिकांश हिस्सा स्थित था बड़कल लेक के ठीक नीचे—
मूर्ति की आंख में जड़े उस बेशकीमती हीरे को नाम दिया गया था 'वीनस'—
शायद ये विश्व का सबसे बड़ा हीरा था—
...जिसे लूट लेने की योजना पर काम मुकम्मल हो चुका था... क्योंकि अब उस स्थान से ठीक एक फुट दूर था... जहां कि वह मूर्ति स्थित थी—
दर्शकों को ठीक ग्यारह बजे उन गुफाओं में प्रवेश की अनुमति थी।
मध्य काल की गुफाओं की मूल मूर्तियों को देखने का ये अनुभव अनोखा होना चाहिए।
ग्यारह बजने में दस मिनट शेष हैं।
TICKETS
गुफाओं को देखने के लिए भारी भीड़ हर समय तैयार रहती थी।

अन्दर उस गुफा में मुस्तैद खड़े थे दोनों कमाण्डोज़-
शायद किसी भी खतरे का सामना करने के लिए।
तभी धड़ाक से उड़ गया गुफा की दीवार का वो हिस्सा-
??
फिर इससे पहले कि दोनों कमाण्डोज कुछ समझ पाते गुफा गूंज उठी रिवॉल्वर से चली गोलियों की आवाजों से –
धांय
आह
धांय
आहँह
दोनों कमाण्डोज़ को 'एट-द-स्पॉट' खत्म करने के लिए ब्रजेश को पूरा रिवॉल्वर ही खाली करना पड़ा था –
उसी समय गुफाओं को दर्शकों के लिए खोल दिया गया था-
इधर अश्वरथ पर सवार अश्वराज आ खड़ा हुआ था झील के किनारे-
अश्वराज! झील गहरी है।
उस नाव वाले से बात करता हूं।
अरे, भाई सुनो!
हमें झील पार करनी है।
दोनों को? ना बाबा ना! तुम्हें अकेले आना है तो आओ!

तब फिर तुम आओ बेटा! हम कोई दूसरा इन्तज़ाम करते हैं।
अश्वराज! इसकी नाव तो मज़बूत है। और यहां तक झील भी अधिक गहरी नहीं है तुम कहो तो मैं नाव को बांध लाऊं
रहने दे अश्वट! अगर उसकी इच्छा हमें ले जाने की नहीं है तो ना सही।
इधर गोलियों के धमाकों ने गुफा में तैनात सुरक्षाबलों में हड़कम्प मचा दिया—
गोलियां किस ओर चली हैं इसका अनुमान लगाना मुश्किल है।
लेकिन गोलियां चली तो ज़रूर हैं।
मैं दर्शकों के प्रवेश को रोकता हूं हालांकि अब ये मुश्किल लग रहा है।
तब तक पचासियों की संख्या में दर्शक एक-दूसरे से जुड़ी उन गुफाओं में समा चुके थे—
वाह! अद्भुत गुफाएं हैं।
इधर उसी समय ब्रजेश खोज चुका था वीनस को—
वाह! करोड़ों या शायद अरबों की आंख पर अब मेरा अधिकार हो चुका है।
बाज़ के समान ब्रजेश झपट पड़ा उस आंख पर—
ओह! भागते कदमों की आवाजें इधर ही आ रही हैं।
और निश्चित रूप से कदमों की ये आवाजें कमाण्डोज़ की हैं।
फिर एक साथ दोनों काम हुए—
इधर कमाण्डोज़ के प्रवेश के साथ ही उनकी गनें ब्रजेश की ओर उठीं और इधर ब्रजेश ने ड्रिल द्वारा तैयार उस छिद्र की ओर जम्प की—
उसके हाथ में वीनस है।
किल हिम!

'तीनस' को हाथ में दबोचे भागता चला गया वह-
मैं जानता था कि मुझे इतनी ही फुर्ती से अपना काम पूरा करना है।
गोलियों की आवाजों ने लड़ातड़ उसका पीछा किया था।
सुरंग से निकलकर कुएं के तल पर पहुंचते ही चिल्ला पड़ा वह-
पटेल! हरी अप! यार रस्सी खींचो, ऊपर खींचो मुझे!
खींच रहा हूं! खींच रहा हूं!
पटेल के हाथों में मानो बिजली सी भर गई थी-
लेकिन इसी पल किस्मत ने उसका साथ देने से इंकार कर दिया था।
ओह नो! पुल्ली टूट गई!
अब भारी पड़ गया पटेल को रस्सी खींचना-
पटेल! जल्दी कर! वरना मैं जिन्दा नहीं बचूंगा! कमाण्डोज इधर ही आ रहे हैं!
भागते कदमों की आवाजें निकट और निकट आती जा रही थीं।
उफ! क्या हो गया है तुझे! सारी योजना पर पानी फिरा जा रहा है।
मगर नहीं! बृजेश अपनी मेहनत को इतनी आसानी से मिट्टी में नहीं मिलने देगा।

ब्रजेश और पटेल की खोदी सुरंग को पार कर कमाण्डोज मुक के बाद मुक कुएं के तल पर आ पहुंचे–
ओह माई गॉड! सुरंग खोदकर की गई है ये चोरी।
वो आ रहा है चोर!
श... शट हिम!
तीर की सी तेजी से कुएं की दीवार से टकराया वह दस्तीबम–
धड़ाम
काल सिर पर मंडरा रहा था उनके–
और इसी के साथ कुएं की दीवार को भेद कर कुएं में आकर गिरीं पानी की कई मोटी धारें–
कुएं की दीवार बड़कल झील से सटी है। भागो! वरना हम सब की जल समाधि बन जायेगी।
गुड़ुप
इतने समय में ऊपर पहुंच गया था ब्रजेश–
य... ये तूने क्या किया ब्रजेश! यह समय दर्शकों के लिए कुआं देखने का है...
हम्फ... अगर... अगर मैं ऐसा न करता तो वो मुझे मार डालते।

..चल! भाग यहां से! हम्फ
उफ! सैकड़ों लोग इस समय गुफाओं में होंगे और झील का पानी अब पूरे वेग के साथ कुएं और हमारी खोदी सुरंग के रास्ते उन गुफाओं में पहुंचेगा तो तबाही आ जायेगी।
मैंने जानबूझ कर इस तबाही को नहीं आमंत्रित किया। और अब तू चुपकर। जो हो गया वो लौट नहीं सकता।
इधर पूरे वेग के साथ पानी भविष्काल की उन सुरंगों में प्रवेश करता चला गया—
आह! बचाओ!
गुलुप
उन गुफाओं का कोई हिस्सा ऐसा न बचा था जहां पानी गुफा की छत को न छूने लगा हो—
आह
ईऽऽ
उफ़
गुलुप
गुफाओं में मौजूद विद्युत व्यवस्था के कारण पानी में करंट फैल गया था—
उसी समय विद्युत व्यवस्था ठप्प कर दी गई—
DANGER
क्लिक
इधर पानी से खाली होती चली गई झील—
!!
झील का पानी कहां गया?

किनारे खड़े अश्वराज और अश्ववट के लिए भी ये हैरत का जबरदस्त झटका था —
अश्वराज! झील का पानी क्या हुआ?
??
कमाल है! लेकिन फिलहाल हमारी झील पार करने की समस्या तो खत्म हुई।
और तभी चौंक पड़ा अश्वराज —
ये चीखों के स्वर कहां से आ रहे हैं?
अश्वराज! चीखों के स्वर! लगता है बहुत से लोग मुसीबत में हैं।
चीखों के स्वर उस कुएं में से आ रहे हैं।
अश्ववट! तू यहीं ठहर! मैं अभी आया! शायद किसी को मेरी मदद की जरूरत हो।
और फिर शीघ्र ही कुएं से निकली सुरंग में था अश्वराज —
सुरंग में इतना पानी कहां से आया? कहीं झील का सारा पानी इन्हीं सुरंगों में तो नहीं पहुंच गया!
बचाओ!
और...उफ! वहां पानी में तैरती लाशें!

बहुत सी गुफाएं मालूम पड़ रही हैं यहां। और सब पानी से लबालब भरी। इन्हें पानी से फौरन खाली करना होगा।
क्योंकि इसके बिना इन सबको मैं एक साथ नहीं बचा सकता।
मगर ये सब हुआ कैसे?
अश्वराज ने अपनी शक्ति से तोड़ा गुफा में दिखाई पड़ रहे उस रोशनदान को—
इसके दूसरी ओर क्या है?
ओह! दूसरी ओर गहराई है और इस ओर किसी आबादी के होने का भी कोई संकेत दिखाई नहीं पड़ रहा।
अश्वराज ने दीवार पर टंगे एक भारी-भरकम कलात्मक पाषाण पहिये को उठा लिया।
और—
अगर इस ओर की गुफा की दीवार को तोड़ दिया जाए तो गुफा के जल स्तर को नीचे लाया जा सकता है।

पूरे वेग के साथ पानी को बाधाओं से निकलने की राह मिल गई थी--
तरड़ड़ड़
और डूबतों को जिन्दगी-
ओह! इन लोगों में से कई अभी जीवित हैं। इनके पेट में भरे अतिरिक्त जल को बाहर निकाल कर इन्हें बचाया जा सकता है।
तब तक बाहर से भी आ पहुंची मदद--
जल्दी करो! इन्हें फौरन (फर्स्ट एड) की जरूरत है।
उफ! कितना कहर मचा है उस चोर के कारण! उसे बख्शा नहीं जायेगा।
फिर अश्वराज वापस अश्ववट के निकट पहुंचा और--
अश्ववट। यहां का संकट तो फिलहाल टल गया है जो मुक्त हीरा चोर की हरकत का परिणाम था।
ओह!
वहां अश्वराज को पता चला आग के चोर को।
अब हमें अतिशीघ्र शहर पहुंचकर ढूंढा की खोज करनी है ताकि हम जल्द से जल्द नीलकंठ को उससे प्राप्त कर सकें।

और इस सनसनीखेज, हृदयविदारक घटना के तुरन्त बाद शहर की नाकेबन्दी कर दी गई–
वह दुर्लभ अश्वमण्ड-आई अभी शहर में ही है। इस नाकेबन्दी से उस आँख के साथ अपराधी शहर से बाहर नहीं जा सकेंगे।
STOP
CHECK POST
रेलवेस्टेशन, बस अड्डा और शहर से निकलने के सभी रास्तों पर जबरदस्त चैकिंग थी।
हीरे की वह दुर्लभ आँख तो सुरक्षित हो गई।
हाँ! लेकिन तुम्हारे इस चक्रव्यूह के बारे में कुछ मुझे भी तो बताओ।
ब्रजेश के इस प्रश्न पर पटेल की आँखों में नई सी चमक उभर आई—
ब्रजेश, इस समय हम जिस स्थान पर खड़े हैं वहाँ तक सिर्फ चक्रव्यूह को भेदकर ही पहुँचा जा सकता है, और यहाँ तक पहुँचने का एक मार्ग और भी है। जिससे कि तुम इस घोड़े नीलाम्बर के साथ पहुँचे हो...
??
...लेकिन उस मार्ग को भी केवल अन्दर से ही खोला जा सकता है। यानी वहाँ तक पहुँचने के लिए हर हाल में किसी न किसी को चक्रव्यूह से होकर गुजरना ही पड़ेगा।
दरअसल मैं तुम्हें बताता हूँ कि इस शानदार जगह का मालिक मैं अनायास ही कैसे बन गया हूँ, लेकिन पहले हम बाहर चलें।

उसी समय पुलिस के जासूसों को उस कुएं के आसपास के निरीक्षण के पश्चात् मिल चुका था वह पर्स—
ये पर्स तो कुख्यात चोर ब्रजेश का है।
ओह! इसका मतलब हुआ कि चोर वही है।
अब ब्रजेश की तलाश में जुट गई थी शहर की सारी पुलिस —
वें अऽऽऽऽ
जौहरात की चोरी का दोषी कुख्यात चोर ब्रजेश।
इधर ब्रजेश और पटेल एक कार द्वारा पहुंच चुके थे उस शानदार रेस्तरां में—
सेठ झुनझुनवाला ने उस तिलिस्म के रूप में एक शानदार मनोरंजन लोगों को देने की योजना बनाई थी। जबकि इधर मेरा इसी तरह के किसी मनोरंजन का लेख कई मैगज़ीनों में प्रकाशित हो चुका था। जिसके निर्माण सम्बन्धी योजना मैं अपने इंजीनियरिंग प्रशिक्षण दौरान बना चुका था।
PEARL RESTAURANT
इस प्रकार हम दोनों के बीच योजना बन गई लेकिन तिलिस्म पूरा होने से पहले ही सेठ को हार्ट अटैक का दौरा पड़ गया...
और चूंकि सेठ का कोई वली-वारिस न था अतः सेठ की सारी सम्पत्ति पर मैंने अपना कब्ज़ा कर लिया।
लेकिन दुख यह जानकर हुआ कि सेठ अपनी सारी कमाई इसी तिलिस्म के निर्माण में झोंक चुका था और अभी भी वह तिलिस्म अधूरा था।

लेकिन अब तुम्हारी सारी प्राब्लम सॉल्व हो गई समझो। अब तुम अपने उस तिलिस्म को पूरा करके अपनी बुद्धि का लोहा दुनिया में मनवा लेना।
चल! अब तू जल्दी से खाना खा... ओह, पुलिस...
...भाग ब्रजेश पुलिस।
गर्म लोहा अगले ही पल आ घुसा पटेल की खोपड़ी में–
आह!
पटेल चीख मारकर वहीं लुढ़क गया जबकि ब्रजेश एक क्षण को भी वहाँ न ठिठका था।
और हिरन की तरह कुलांचें लगाता ब्रजेश उन तंग गलियों में बढ़ता गया, बढ़ता गया।
क्या पटेल मारा गया होगा?
वह इसी ओर गया है। वह हमें जिन्दा या मुर्दा चाहिए।
इधर ब्रजेश अपनी नकली दाढ़ी-मूंछ उखाड़कर फेंक देने के बाद उड़ा जा रहा था उस घोड़ी पर–
शादी की ये घोड़ी सही समय पर हाथ लग गई। और अब मैं अपना ये नकली हाथ भी उतार कर छिपा दूं ताकि पुलिस दो हाथों वाले ब्रजेश को ही ढूंढती रहे।
अपनी रिवर्सीबल जैकेट को भी वह उतारकर पलट कर पहन चुका था। एक हाथ कटा होने के बावजूद भी टुंडा कितना परफेक्ट चोर था।

और इधर अचानक चौंक पड़ा अश्वराज—
अश्ववट! वो देख। ढुंढा। ये वही ढुंढा हो सकता है। क्योंकि मुक तो हम अब्दुल्ला की बताई जगह पर हैं। दूसरा घोड़े के उस सवार का भी मुक हाथ ही है।
मगर ये तो दौड़ा आ रहा है।
तेज दौड़ अश्ववट! ढुंढा का मिलना बहुत जरूरी है।
वाह! इसने तो सड़क को घुड़दौड़ का मैदान बना दिया।
शीघ्र ही—
अश्वराज! ढुंढा उस इमारत में प्रवेश कर गया है।
पापा! मैंने उस घोड़े को इन्सानों की तरह बोलते हुए देखा।
लगता है तू केबल पर फिल्में ज्यादा देखने लगा है।
अश्ववट भी उतनी ही तेज़ी के साथ उस इमारत में प्रवेश कर गया।
दरवाज़ा अपने आप बन्द हो रहा है।
दरवाज़ा जरूर बन्द होगा।...
...मगर अश्ववट को अन्दर लिए बिना नहीं।
शाबाश अश्ववट!

अश्ववट! उस तरफ एक और दरवाजा बन्द हुआ है। उधर चल।
खट
टप टप टप
कक्ष के निकट पहुँचकर अश्वराज अश्ववट से नीचे उतर आया।
अश्वराज ने भीतर प्रवेश किया ही था कि-
हाथ ऊपर कर लो वरना खोपड़ी उड़ा दूंगा।
!!
टुंडा लौट आया था अपने वाले रूप में।-
कौन हो तुम?
अश्वराज। मुझे टुंडा की तलाश है। मुझसे उसने नीलकंठ वापस चाहिए। और नीलकंठ मेरे घोड़े का नाम है।
शायद मुझे चोर बदमाश समझ रहा है
और तभी—
अरेरेरे!
ओह, अश्ववट! आ गया तू भी अन्दर!
देखो! मुझे सिर्फ मेरा घोड़ा नीलकंठ चाहिए जिसे अब्दुल्ला से टुंडा लेकर आया है...
अरे मक्कार, मुझे नीचे तो उतारो।

अश्वराज के कहने पर अश्ववट ने ब्रजेश को फर्श पर उतार दिया—
हमने दुष्टा को इसी ओर आते देखा है। अब बताओ कि वह कहाँ है?
त... तुम्हें तुम्हारा नीलकंठ चाहिए न?
आओ मेरे साथ।
ब्रजेश उन्हें एक अन्य कक्ष में ले गया—
ये मैजिक-आई है। इसमें देखकर बताओ कि क्या यही तुम्हारा नीलकंठ है?
आह!
हिनन
मैजिक आई में देखते ही अश्वराज प्रसन्नता से बुदबुदा उठा—
हाँ... नीलकंठ!
!!
यह तो नीलकंठ ही है।
आगे बढ़ आया अश्ववट भी—
हिनन आह अश्वराज! तुम कहाँ हो?
अश्ववट ने मैजिक-आई से आँख हटाई तो नम थी उसकी आँख—
अश्वराज! नीलकंठ तुम्हें याद कर रहा है।
मैं उसे लेने ही तो यहाँ आया हूँ। वह जल्दी ही पुनः हमारे साथ होगा।
बोलने वाला घोड़ा! नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता।

अश्वराज पुनः ब्रजेश की ओर पलटा—
जल्दी बताओ कि मुझे नीलकंठ कैसे मिल सकता है। मैं उसके लिए कोई भी कीमत चुकाने को तैयार हूं।
ओह!
मुझे ये कोई साधारण मानव नहीं दिखाई पड़ रहा। इसके पास निश्चित रूप से बोलने वाला घोड़ा है। उसे चाहिए नीलकंठ और मुझे चाहिए वीनस। अगर मैं इसे चक्रव्यूह में भेज दूं तो शायद ये वीनस को लाने में सफल हो जाए।
ब्रजेश के होंठों पर एक व्यापारी की सी मुस्कान आ गई—
तुम्हें नीलकंठ के लिए कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ेगी अश्वराज! लेकिन नीलकंठ तक पहुंचने के लिए तुम्हें एक चक्रव्यूह को तोड़ना होगा। उसके बगैर तुम नीलकंठ को नहीं पा सकते।
नीलकंठ को पाने के लिए मैं चक्रव्यूह को अवश्य भेद दूंगा।
तो फिर चलो। प्रवेश कर जाओ इस द्वार में।
अश्वराज! तुम निश्चिंत होकर भीतर जाओ। अगर इसमें कोई धोखा हुआ तो मैं इसे बख्शूंगा नहीं।
!!
नहीं! इसमें कोई धोखा नहीं है।
और मैं यहां से तुम्हें प्रत्येक चक्रव्यूह के विषय में जानकारी दूंगा।
अश्वराज के प्रवेश के साथ ही वह द्वार भी बंद हो गया—

गूंज उठा स्वर—
अश्वराज! पहला चक्रव्यूह तुम्हारे सामने है...
अपनी दाईं ओर की दीवार पर लगे लीवर को नीचे कर देने से इस चक्रव्यूह का मैकेनिज़्म चालू हो जायेगा।
और तुम्हारे सामने मौजूद वो पाइप घूमने लगेगा
??
घर्र्र्र...
और पाइप के दूसरे सिरे पर बहने लगेगा एक झरना...
...अब तुम तुरन्त दाईं ओर टंगा वह बर्तन हाथ में ले लो।
अश्वराज! तुम्हें उस झरने से पानी लाकर दीवार में टंगे कांच के इस दूसरे बर्तन में भरना है। जल्दी करो!
कांच के इस दूसरे बर्तन के भरने पर ही तुम्हें आगे बढ़ने के लिए एक चाबी मिलेगी।
लेकिन ध्यान रहे! इस काम के लिए तुम्हारे पास केवल तीन मिनट हैं। अगर तुम असफल हो गए तो मौत का दूसरा रूप तुम्हारे सामने होगा—
घर्र्र्र
जबरदस्त संतुलन बनाना होगा मुझे इस घूमते पाइप पर।

घूमते हुए पाइप पर आगे बढ़ना अत्यन्त दुष्कर कार्य था–
क्या मैं तोड़ पाऊंगा उस चक्रव्यूह को?
लेकिन नीलकंठ को पाने के लिए मुझे तोड़ना ही होगा इस चक्रव्यूह को। उफ़!
इसी पल बुरी तरह डगमगाया अश्वराज और–
उफ़!
पाइप के साथ ही घूमता चला गया अश्वराज भी–
एक बार फिर स्वयं को संतुलित कर पाइप पर खड़ा होकर आगे बढ़ा वह, और–
उस बर्तन के भरने के लिए मुझे इस झूले के कम से कम तीन चक्कर लगाने होंगे।
बर्तन का सारा पानी उसने कांच के बर्तन में उलट दिया–
अश्वराज! डेढ़ मिनट बीत चुका है।
बृजेश की आवाज़ निरन्तर गूंज रही थी–
इधर अपना दूसरा चक्कर पूरा किया अश्वराज ने–
अश्वराज! दो मिनट बीत चुके हैं।
क्योंकि संतुलन बनाने के चक्कर में काफी पानी राह में ही छलक रहा है।
समय कम है और अभी मुझे बर्तन भरने के लिए दो चक्कर और लगाने होंगे।
और फिर चौथे चक्कर में–
ओह! यह क्या? पाइप बीच में से अलग होकर दीवार में समा रहे हैं। और इनके घूमने की गति में भी अंतर आ रहा है।

परीक्षा की घड़ी थी ये अश्वराज के लिए—
झरना बहना बन्द हो गया। लेकिन मेरा बर्तन भर चुका है।
घर्र्र्र्र
ओह! यह शोर कैसा?
पूरी की पूरी छत रेंगती हुई नीचे आ रही थी—
उफ! अगर मैं यहां से शीघ्र ही बाहर न निकला तो छत और फर्श आपस में सट जायेंगे जिनके बीच पिस जाऊंगा मैं।
तब तक पाइप एक-दूसरे से काफी दूर हो चुके थे—
अब उस पाइप तक पहुंचने के लिए मुझे लगानी ही होगी यह छलांग जो या तो मेरी सफलता होगी या फिर मेरी मौत।
इधर मैजिक आई में देखता अश्वघट भी चीख उठा—
और अब तक नीलकंठ बाहर नहीं आयेगा तब तक मुझे भी वीनस नहीं मिल पायेगा।
अश्वराज! संभल कर अश्वराज!
कुछ नहीं हो सकता। तुम्हारा साथी अब नहीं बचेगा। उफ! अब तो पाइप ने भी घूमना बन्द कर दिया है।
लेकिन दृढ़ आत्मविश्वास हो तो फिर कौन रोक सकता है सफलता के शिखर तक पहुंचने से—
अश्वमानव होने के कारण मैंने तो यह छलांग लगा भी ली वरना कोई इंसान यह काम नहीं कर सकता था।
उस पाइप पर अश्वराज अपने पांव जमाने में सफल रहा—
तीव्र गति से आगे बढ़कर अश्वराज ने कांच के उस बर्तन को पानी से लबालब भर दिया—
उफ! पाइप दीवार में समाने ही वाला है।

दूसरे ही पल दीवार में एक रिक्त स्थान पैदा हुआ और दिखाई दी एक चाबी और उस चाबी को लगाने का स्थान—
अश्वराज! जल्दी करो। इस चाबी लगाने के लिए एक छिद्र भी वहीं बना है। छत तुम्हारे सिर तक आ पहुंची है।
बाज की तरह चाबी उठा ली उसने।
चाबी को उस छिद्र में डालकर घुमाए जाते ही—
ओह! दीवार में रास्ता बन रहा है।
जम्प! अश्वराज कूदो।
और अश्वराज के दूसरी ओर जम्प करते ही पाइप दीवार में समा गए और छत फर्श से आ सटी—
खटाक
इसी पल गूंज उठी ब्रजेश की आवाज—
वाह! बहुत खूब अश्वराज तुमने बड़ी खूबी से पहले चक्रव्यूह को पार कर लिया है।
और अब तुम्हारे सामने है दूसरा चक्रव्यूह
यहां तुम दीवार पर बनी एक घोड़े की खांचा आकृति देख रहे हो। इस खांचा आकृति से घोड़े के शरीर के सभी हिस्सों को निकालकर तुम्हारे इर्द-गिर्द जमीन पर बिछी रेत में दबा दिया गया है...
...इस आकृति में पहला टुकड़ा फिक्स करते ही इस चक्रव्यूह का मैकेनिज्म चालू हो जायेगा और इसे पूरा करने के लिए तुम्हारे पास समय होगा पांच मिनट...

अश्वराज जुट गया घोड़े के जिस्म के टुकड़ों की तलाश में –
यह कार्य अधिक कठिन नहीं होना चाहिए।
ध्यान रहे अश्वराज! सिर्फ पांच मिनट अन्यथा मुश्किल में पड़ जाओगे।
ओह! मिल गया घोड़े की आकृति का एक हिस्सा। यह पूंछ है।
घर्र्र्र...
इसी के साथ चालू हो गया चक्रव्यूह का मैकेनिज्म।
यह पेट है...
यह पीठ।
यह चेहरा। मगर इसमें आंख नहीं है।
उफ! आंख जैसी छोटी चीज को रेत के विशाल रेगिस्तान में ढूंढना भूसे में से सुई ढूंढने के बराबर होगा।
अश्वराज केवल डेढ़ मिनट बचा है।
उफ! आंख नहीं मिल रही।
अश्वराज! अब केवल आधा मिनट यानी तीस सेकिण्ड।

पन्द्रह क्षण... दस... पांच... तीन... दो...
उफ!
...पुक
मिल गई! यह रही!
झपट पड़ा अश्वराज आंख पर—
और इसी पल कक्ष में चल पड़ी आंधी जबरदस्त आंधी। अश्वराज ने वह आंख तो मुट्ठी में दबोच ली थी, लेकिन रेत के उस तूफान में अपनी आंखें वह खुली न रख पाया—
उफ! इस आंधी में सांस लेना भी दूभर हो रहा है।
गर्म होने लगी रेत भी।
दीवार का अनुमान लगा कर अश्वराज जा पहुंचा आकृति तक।
इस आंख को यथास्थान फिट करना होगा।
नाक और मुंह में रेत भर जाने के कारण दम घुटने लगा था उसका—
अश्वराज ने आंख को आकृति के आंख वाले स्थान पर फिक्स कर दिया। और उसके ऐसा करते ही वह सम्पूर्ण आकृति दूसरी ओर उलट गई। वहीं कोई बन गया उस आकृति की शक्ल का द्वार लेकिन—
मुझे... मुझे कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा... मेरा दम घुट रहा है अश्ववट! मैंने आकृति को पूरा कर लिया है, लेकिन मुझे इस चक्रव्यूह से निकलने का रास्ता दिखाई नहीं पड़ रहा।

गूंज उठी ब्रजेश की आवाज़—
अश्वराज ! वह आकृति ही द्वार है। अगर तुमने आकृति को पूरा कर लिया है तो उसी आकृति वाले द्वार में कूद जाओ। अन्यथा तीस सेकिण्ड में वह द्वार बन्द हो जायेगा और फिर तुम ज़िन्दा यहाँ से नहीं निकल पाओगे।
?
अश्वराज प्रवेश कर गया उस आकृति वाले द्वार में इसी के साथ बन्द हो गया द्वार—
खटाक
उफ़!
इसी पल गूंज उठीं हिनहिनाहट की आवाज़ें।
आंख फाड़-फाड़कर उन्हें खोलने का प्रयास करता चीख उठा अश्वराज—
न... नीलकंठ! म... मैं आ गया नीलकंठ! देख मैं आ गया...
हिनन! (अश्वराज! ओह! कहीं मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा!) हिनन।
अश्वराज लिपट गया नीलकंठ से—
आखिर मैंने तुझे पा ही लिया नीलकंठ!
हिनन! (ओह, अश्वराज! इस अजूबे संसार में तुम्हारे और अपने शेष अश्वमित्रों के बिना कितना अकेला हो गया था मैं) हिनन!
तभी गूंज उठा ब्रजेश का स्वर—
अश्वराज! दीवार पर लगे उस बटन को दबा देने से तुम दोनों इस चक्रव्यूह से बाहर आ जाओगे।
और ऐसा करते ही खुल गया वह द्वार जिसके पार दिखाई पड़े ब्रजेश और अश्वघट—
हाहाहा! अश्वराज! माना कि तुम बुद्धिमान हो। मगर अब कोई हरकत मत करना।

...क्योंकि तुम्हारे चहेते अश्वद्ल की गर्दन में मैंने एक बम डाल दिया है अगर मैंने बम पर गोली चला दी या बम को किसी किस्म का झटका लगा तो अश्वद्ल के परखच्चे उड़ जायेंगे।
अश्वराज! उस झरोखे में तुम्हारी स्थिति देखने में हुई मेरी असावधानी का लाभ उठाकर इसने ये हरकतें कर डालीं।
ओह!
क्या चाहते हो तुम?
वीनस, नायक, वह अनमोल हीरा जो कि नीलकंठ के पास है और जिसे अश्वकाल की बहुओं से प्राप्त करने के लिए मैं जान पर खेल गया था।
चौंक पड़ा अश्वराज—
क्या? वह चोरी तुमने की थी जिसके कारण सैकड़ों लोगों की जान पर आ बनी थी हत्यारे!
तू अब अपने बुरे अंजाम से नहीं बच सकता।
लेकिन नीलकंठ के पास वीनस कहां है?
अश्वराज! वीनस नीलकंठ के पास ही है।
उसके पेट के बाईं ओर एक निशान बना है।
पशुओं के डॉक्टर द्वारा एक छोटे से ऑपरेशन के बाद हमने वीनस को नीलकंठ के पेट में छिपा दिया था।
ओह!

जिसे अब मैं इसका पेट चीरकर बाहर निकाल लूंगा।
यह क्या? तुम्हारा हाथ?
एक और झटका था ये अश्वराज के लिए।
मैं टुंडा ही हूं अश्वराज। मेरा ये हाथ नकली है।
और अब तुम जल्दी से नीलकंठ से दूर हट आओ।
टुंडा बढ़ा नीलकंठ की ओर और अश्वराज का मस्तिष्क तेजी के साथ चल रहा था—
जब तक अश्वरथ इस शैतान के निशाने पर है मैं भी कुछ नहीं कर सकता।
इसे रोकना होगा।
शैतान टुंडा का हाथ बढ़ा नीलकंठ की मौत बना उसके पेट की ओर—
हा हा हा
चाकू को नीलकंठ के ऑपरेशन वाले स्थान पर फिक्स करने के लिए क्षणभर को टुंडा का ध्यान अश्वराज की ओर से हटा—
इसी पल जैसे अश्वराज के पांव के निकट बिजली-सी चमकी—
धड़ाक
फिर—
ओह, नहीं!

अवसर का लाभ उठाया नीलकंठ ने और चबा डाली उसकी पिस्टल वाली कलाई--
आऽऽह
हिननन! अश्ववट के परखच्चे उड़ा दूंगा कमबख्त!
अश्वराज ने उसके सिर को पकड़कर एक तीव्र झटका दिया उसे--
नहींऽऽआह
तेरे जैसे रहम योग्य नहीं हैं ढुंडा!
नीलकंठ! जल्दी कर सावधानी से वह विस्फोटक अश्ववट की गर्दन से बाहर निकाल दे!
अश्वराज! तेरे टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा मैं!
ढुंडा झपट पड़ा अश्वराज पर इसी पल अश्वराज ने वह पंजा अटका दिया ढुंडा की कलाई में
अश्वराज ने ढुंडा को दीवार पर उछाल दिया--
धड़ाक
आह

इसी पल नीलकंठ ने वह बम टुंडा की गर्दन में डाल दिया —
टिनन
नहीं...
शाबाश नीलकंठ!
खबरदार टुंडा! अब अगर तुम हिले तो तुम्हारा हश्र वैसा ही होगा। जैसी कल्पना तुम अश्वबट के हश्र की कर रहे थे।
इसे शायद पता नहीं कि मुझे ये विस्फोटक अस्त्र चलाना नहीं आता। हा! हा! हा!
नहीं!
और फिर उस चौकी का थाना इंचार्ज बुरी तरह से चौंक उठा जब उसने वहां प्रवेश किया —
लीजिए श्रीमान! ये रहा मध्यकाल की वस्तुओं से चुराए गए हीरे वीनस का चोर!
क्या? और हीरा कहां है?
हीरा भी सुरक्षित है।
मगर उसके लिए आपको मूक पशुओं के चिकित्सक का इंतजाम करना होगा जो नीलकंठ के शरीर से हीरा निकाल सके।
और इस प्रकार बरामद हुआ वीनस —
यह रहा वीनस।
लेकिन नीलकंठ नामक इस घोड़े को विश्राम की सख्त आवश्यकता है।
तब —
नीलकंठ! तू यहां विश्राम कर क्योंकि अभी मुझे रक्तापक्कर और श्रेयाशक्ति के साथ राजकुमारी कनकप्रभा की भी तलाश करनी है। और यह तलाश पूरी होते ही मैं तुझे यहां से ले जाऊंगा।
लेकिन मुझे तुम्हारी प्रतीक्षा रहेगी अश्वराज! अश्वबट।
अच्छा नीलकंठ! एक बार फिर हम अश्वराज के रथ में इकट्ठे होंगे। इस उम्मीद के साथ अभी हम तुमसे विदा लेते हैं।

समाप्त